अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हिन्दी की उपयोगिता के सन्दर्भ में पटकथा (स्क्रिप्ट) लेखन

डॉ0 रेखा चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
ए0के0पी0 (पी0जी0) कॉलिज, खुर्जा।

सम्पूर्ण वि"व अनन्त सौन्दर्य का भण्डार है। उस स्रष्टा ने इस अद्भुत धरा पर ऐसे दिव्य सौन्दर्य की सृष्टि की है, जिसका आभास हमें वन, पर्वत, नदियाँ, निर्झर, प"ा–पक्षियों के रूप में साकार हुआ मिलता है। सौन्दर्य में एक सहज आकर्षण होते हुए भी रूचि–भेद देखा जाता है। जो पदार्थ या वस्तु एक व्यक्ति को सुन्दर लगता है, वही पदार्थ–वस्तु दूसरे को सुन्दर नहीं जान पड़ता। केवल उपयोगी लगता है। कविवर बिहारी इस रूचि–भेद को इस तरह व्यक्त करते हैं –

समै–समै सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय।
जाकी रूचि जेती जित, ते तौ सुन्दर होय।।

अर्थात् व्यक्ति की रूचि–अरूचि ही सौन्दर्य का मापक होता है। महान विचारक सुकरात लिखते हैं कि–***''जो सर्वथा अनुरूप हो, जो प्रिय हो वही सुन्दर होता है।''*** आचार्य शुक्ल के अनुसार–***''सौन्दर्य एक मनोद"ाा वि"ोश है, अनुभव का विशय है। यह एक गुण है, जो वस्तु के अन्तः वाह्य सामन्जस्य से अथवा उसकी समग्रता से उत्पन्न होता है।''*** सत्य तो यह है कि अनुकूल और अनुरूप वस्तुएँ ही हमारे आकर्षण का केन्द्र बनती है।

अब बात आती है भाषा और साहित्य की, तो भाषा में भी किसी ने सौन्दर्य खोजा और सरस साहित्य की रचना कर डाली। उसी भाषा को किसी ने रोजगार और व्यवसाय के साधन के रूप में प्रयोग किया और उससे धनार्जन किया। काव्य की व्याख्या करने वाले आचार्यों ने भी काव्य का प्रयोजन बताते हुए कीर्ति, लोक–व्यवहार, परिनिवृति, कान्तासम्मितवाणी के अतिरिक्त अर्थ (धन) को भी काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है।

आचार्य भरतमुनि अपने ग्रंथ 'नाट्य"ाास्त्र' में लिखते हैं –

दुखार्तानां श्रमार्तानां शोकर्तानां तपस्विनाम्।
विश्रामजनन लोके नाट्यमेतद भविष्यति।।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अर्थात् दुख, श्रम, शोक से आर्त तपस्वियों के विश्राम के लिए ही नाट्य या काव्य या साहित्य का उद्भव हुआ। आचार्य भरतमुनि से इतर आचार्य भामह 'काव्यालंकार' में काव्य प्रयोजन की चर्चा करते हुए लिखते हैं –

धर्मार्थ–काम–मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च,
करोति कीर्ति प्रीतिच साधुकाव्य–निवन्धनम्।।

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा कलाओं में विलक्षणता पाना तथा कीर्ति और आनन्द प्राप्त करना ही काव्य का प्रयोजन है। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा मात्र साहित्य सृजन और आनन्द या य"ा प्राप्ति का साधन नहीं है बल्कि यह व्यवसाय के अनकानेक अवसरों का भण्डार है। आज हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है,क्योंकि इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर तेजी बढ़ते जा रहे हैं। आज हिन्दी भाषा जीवन–यापन का स"ाक्त माध्यम बन चुकी है। निजी टी0वी0 चैनलों और रेडियो चैनलों के आगमन के कारण इन क्षेत्रों में नौकरियों के अवसर में कई गुना बढोत्तरी हुई है।

धर्म, काम, मोक्ष तथा मनोरंजन प्राप्ति के सीमित दायरे से निकलकर आज हिन्दी भाषा अर्थ (धन) प्राप्ति का प्रबल साधन बन गयी है। रोजगार, व्यवसाय के लिए अनुपयुक्त होने का आरोप जिस हिन्दी पर द"ाकों तक लगता रहा, आज उसी भाषा में अनगिनत व्यवसाय के अवसर उपलब्ध हैं, स्क्रिप्ट या पटकथा लेखन उन्हीं में से एक स"ाक्त माध्यम है।

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्पादकों, पत्रकारों, संवाददाताओं, उप–सम्पादक, प्रूफ रीडर, एंकर आदि की आव"यकता होती है। इसके अतिरिक्त रेडियो, टी0वी0, सिनेमा के क्षेत्र में पटकथा लेखक, संवाद–लेखक या गीतकार के रूप में भी व्यवसाय उपलब्ध है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत में टी0वी0 का व्यापक प्रसार हुआ है। चैनलों की वृद्धि के साथ–साथ कार्यक्रमों के प्रकार में भी वृद्धि हुई है। नये–नये ढंग के कार्यक्रम तैयार किये जाने लगे हैं। टी0वी0 या फिल्म निर्माण के आरम्भिक चरण में पटकथा लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य है। सच कहा जाए तो स्क्रिप्ट ही वह ब्लू–प्रिन्ट है, जिस पर सम्पूर्ण कार्यक्रम का ताना–बाना तैयार होता है। पटकथा किसी भी कार्यक्रम में दिखाये–सुनाये जाने वाली बातों का लिखित दस्तावेज है। यह कार्यक्रम के स्वरूप को वर्णित करता है। स्क्रिप्ट या संवाद के आधार पर ही यह तय किया जाता है कि किसी कार्यक्रम में क्या किस ढंग से दिखाया जाना है अर्थात् यह दृ"य एवं ध्वनि का वर्णन करता है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

पटकथा शब्द **'पट'** और **'कथा'** इन दो शब्दों के संयोग से बना है। कथा का मतलब **कहानी** तथा पट का अर्थ **'परदा'** अर्थात् ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। इस तरह हम कह सकते हैं कि जो कथा फिल्म, धारावाहिक के रूप में छोटे या बड़े परदे पर दिखाने के लिए अनेक दृ"यों तथा सूचनाओं के साथ लिखी गई हों, वह **'पटकथा'** है।

वर्तमान समय में फिल्मा, धारावाहिकों या डॉक्यूमेन्ट्रो की ही स्क्रिप्ट या पटकथा नहीं तैयार की जा रही है, बल्कि इस क्षेत्र में अनेकानेक रास्ते सुगम हो गये हैं। आज पटकथा या स्क्रिप्ट लेखन के क्षेत्र में व्यवसाय के बहुत अच्छे अवसर उपलब्ध हैं, क्योंकि इस क्षेत्र में फिल्मों के अतिरिक्त टी0वी0 के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे–धारावाहिक, टी0वी0 समाचार, साक्षात्कार, परिचर्चा कार्यक्रम, क्विज कार्यक्रम, वाद–विवाद कार्यक्रम, विज्ञापन, रियल्टी शो, कार्पोरेट जगत से सम्बन्धित कायक्रम, डॉक्यूमेन्ट्री, टेली"ाोपिंग–कार्यक्रम, टेलीफिल्म, टी0वी0 पत्रिका आदि स्क्रिप्ट लेखन के विस्तृत क्षेत्र हैं। जिसके लिए हिन्दी में लेखन कार्य करके भविष्य संवारा जा सकता है तथा लेखन के इस क्षेत्र में अपनी लेखकीय कु"ालता एवं क्षमता दिखाकर लोकप्रियता हासिल की जा सकती है।

भारत सहित वै"वक स्तर पर टी0वी0 चैनलों की संख्या से पिछले कुछ वर्षों में अप्रत्या"ित बढ़ोत्तरी हुई है और यह क्रिया निरन्तर जारी है। यही कारण है कि टी0वी0 कार्यक्रम निर्माण के क्रम में संवाद–लेखन एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया है और इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ते जा रहे हैं।

पटकथा लेखन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने और अपने व्यापार को उन्नत बनाने के लिए यह आव"यक है कि लेखक अपने भीतर ऐसे गुणों का समावे"ा करे, जिससे कि वह अपने कार्य को अच्छे ढंग से कर सके। स्क्रिप्ट लेखक को निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए –

1. जिस क्षेत्र के लिए वह कार्य कर रहा है, वहाँ की भाषा, संस्कृति और बोलियों का अच्छा ज्ञान हो।
2. लेखक को बॉडी–लैंग्वेज या दैहिक भाषा की अच्छी परख होनी चाहिए।
3. द"ार्कों और श्रोताओं की रूचि–अरूचि का ध्यान रखना चाहिए।
4. लेखक को मीडिया जगत से सम्बन्धित राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों की जानकारी रखनी चाहिए, जिससे कि किसी नियम के उल्लंघन की आ"ांका न बनी रहे।

5. उसे सूचना स्रोतों मीडिया–जगत, नई तकनीक, कम्प्यूटर ज्ञान, सामाजिक घटनाओं, टी0वी0 की भाषा आदि की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। तभी वह एक सफल पटकथा लेखक और उद्यमी बन सकता है।

लेखक को अपने द"र्षकों के बारे में अधिकतम जानकारी रखनी चाहिए ताकि स्क्रिप्ट लेखक प्रभाव"ााली एवं विवादरहित स्क्रिप्ट तैयार कर सके। इसके अतिरिक्त लेखक को मीडिया जगत से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय कानूनों की जानकारी रखना जरूरी है, जिससे कि कानूनों के उल्लंघन की आ"ांका न बनी रहे। स्क्रिप्ट लेखक को सूचना स्रोतों, मीडिया जगत, नई तकनीक, कम्प्यूटर ज्ञान, सामाजिक घटनाओं, टी0वी0 की भाषा आदि की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

पटकथा या स्क्रिप्ट लेखन बड़े ही परिश्रम स्वाध्याय एवं लगन का कार्य है। प्रतिभा सम्पन्न लोग इस क्षेत्र से यदि पूरे परिश्रम से जुड़े तो अच्छी आय और य"ा कमा सकते हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पटकथा लेखन से जुड़कर भी कोई अच्छा लेखक फिल्म–द"र्षकों के दिलों पर राज कर सकता है। लेकिन कहानी को दृ"यों के सांचे में ढालना एक वि"ोष प्रकार की कला को आत्मसात करना है। इस क्षेत्र में अपना भविष्य संवारने की इच्छा रखने वालों को इस कला की बारीकियों को समझने और अभयास करने की अनिवार्यता होती है।

संदर्भ गन्थ सूची

1. पटकथा लेखन एक परिचय – मनोहर श्याम जो"ाी।
2. पटकथा लेखन – कुलदीप सिन्हा।
3. हिन्दी में पटकथा लेखन – जाकिर अली रजनी"ा।
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ0 जितेन्द्र वत्स।
5. कार्यालयी हिन्दी – डॉ0 विजयपाल सिंह।
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेन्द्र।
7. जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता – डॉ0 अर्जुन तिवारी।
8. राजभाषा हिन्दी – डॉ0 भोलानाथ तिवारी।